International Journal of Applied Research 2015; 1(5): 134-135

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
IJAR 2015; 1(5): 134-135
www.allresearchjournal.com
Received: 13-03-2015
Accepted: 09-04-2015

वन्दना देवी
शोध कर्त्री संस्कृत विभाग हि०प्र० विश्वविद्यालय षिमला–5

Correspondence:
वन्दना देवी
शोध कर्त्री संस्कृत विभाग हि०प्र० विश्वविद्यालय षिमला–5

सतीविजय में नारी

वन्दना देवी

'सतीविजयः' कवि जयनारायण यात्री की रचना है। उनकी रचना में तात्कालिक आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिक परिस्थितियों की जानकारी मिल जाती है। उस समय समाज के एक आवष्यक 'अंग' नारी की कैसी दषा थी? इस तथ्य का अन्वेषण इस लेख का लक्ष्य है।

इस कृति में कवि का नारी विषयक दृष्टिकोण उदार एवं विषाल है। कवि की रचना अपने समय का दर्पण होती है। उस समय स्त्रियाँ गृहदेवता के रूप में मानी जाती थीं, जो गृहस्वामी के हृदय पर शासन करती थीं।[2] अर्धांगिनी होने से धार्मिक कार्यों में वही सहधर्मिणी एवं सहायिका होती थी।[3] उत्तम गृह की बहू चरित्रवती तथा सौन्दर्यसम्पन्न होती थी।[4] स्वस्थ तथा निरोग होने पर भी वह पतली कमर वाली होती थी।[5] पति के अनुकूल चलने वाली वह पति के क्रोधित होने पर भी शान्त रहती थी।[6] स्त्री अपने घर की साज सज्जा करती थी।[7]

नारी की देह सुकोमल होती थी तथा पति के साथ उद्यान में भ्रमण करते हुए प्रेमपूर्ण वार्तालाप करते हुए समय व्यतीत करते थे।[8] पति–पत्नी एक–दूसरे के अनुकूल होकर मनोरंजक क्रीड़ाएँ करते थे जिससे जीवन आनन्दमय हो जाता था।[9] गृहस्वामी का व्यवहार बाहर से कठोर और अन्दर से (घर के प्रति) कोमल हुआ करता था।[10]

आपन्नसत्वा वंषबेल को आगे बढ़ाने के लिए संतान सृष्टि करती थी।[11] आपन्नसत्वा नारी का परिवार में विषेष स्थान होता था। इस अवसर पर उनकी इच्छा को पूर्ण करना पुण्य समझा जाता था ताकि भावी सन्तान पर इसका कुप्रभाव न पड़े।[12] नारी का दासी के रूप में वर्णन किया है। [13] गर्भवती स्त्री को करणीय तथा अकरणीय कार्यों का उपदेष दिया जाता था।[14] इस अवस्था में वे शारीरिक श्रम नहीं कर सकती थी, चलने–फिरने में भी उन्हें थकान हो जाती थी। फलतः उन्हें विश्राम करना पड़ता था।[15] गर्भवती स्त्री को हरि का चरित्र, गुण, कीर्ति और उनकी लीलाएँ सुनने को कहा जाता था।16 ताकि सन्तान गुणवान् हो। आपन्नसत्वा स्त्री को प्रसन्न करने के लिए गायक–गायिका, नर्तक–नर्तिका तथा यथेच्छ वक्ता किन्नरों का समाज भी अस्तित्व में था।[17] प्रसव सुखद होने पर देव को इच्छित भेंट समर्पित की जाती थी।[18] प्रसव सुखपूर्वक हो जाने पर उनको पवित्र जल से स्नान कराया जाता था।[19] तत्पष्चात् उनको यज्ञमण्डप में स्थान दिया जाता था। अर्धांगिनी होने से वह धार्मिक कार्यों में सहधर्मिणी एवं सहायिका होती थी।[20] पति–पत्नी में परस्पर प्रगाढ़ प्रेम होता था। पत्नी की आकस्मिक मृत्यु पर पति भी साथ में मरने का इच्छुक होता था।[21] पति द्वारा स्वयं पत्नी का दाह–संस्कार एवं क्रियाकर्म आदि किया जाता था।[22]

'सतीविजयः' में अप्सरा का भी एक नारी के रूपमें उल्लेख हुआ है।[23] उनके द्वारा ऋषि मुनि की तपस्या को भंग करने के लिए अनेक उपाय किये जाते थे।[24] पति और पत्नी में परस्पर निस्वार्थ प्रेम होता था । पत्नी के होने से घर 'घर' कहलाता था।[25] पत्नी की मृत्यु पर भी पुरुष दूसरा विवाह नहीं करता था।[26] स्त्री रहित घर श्मषान तुल्य प्रतीत होता था।[27] पत्नी दुःखार्त पुरुष के लिए संजीवनी–सी होती थी।[28] स्त्री के हाथ से स्पर्ष किए हुए भोजन में मिठास होती थी । स्त्री जब अपने हाथ से भोजन कराती थी तब स्वर्ग से भी अधिक आनन्द का अनुभव होता था।[29] उसे पुरुष की अर्धाङि.नी माना जाता था और वह अपने पति को खुष रखने में कोई कमी नहीं आने देती थी।[30] वृद्धाओं एवं सम्मत रीति विवाहित स्त्रियों का समाज में सम्मान होता था। माताओं के रूप में वे आदरणीय, बहनों तथा वधुओं के रूप में सम्माननीय होती थीं।[31] समाज में स्त्रियां पुत्री, पत्नी तथा माँ के रूप में प्रतिष्ठित होती थी।[32] स्त्रियों द्वारा आपस में हँसी–ठिठोली भी की जाती थी।[33] सुवर्णमयी आभूषणों एवं रेषमी वस्त्रों से सुसज्जित युवतियाँ रात में विवाह के मांगलिक गीत गाती थीं और नाचती थीं।[34] स्त्रियाँ संगीत कला में निपुण होती थीं।[35] संतान के अपहरण होने पर माँ अर्द्धबेहोष हो जाती थी तथा आहार–विहार छोड़ देती थी। उनके मुखमण्डल दुःख से मुरझाकर श्वेत पड़ जाते थे। [36] एकमात्र पुत्री होने पर दहेज में समस्त साम्राज्य दामाद को दिया जाता था।[37] पिता अपनी पुत्री को अत्यन्त प्रेम करता था।[38] पत्नी भी तब पति के साथ तपोवन चली जाती थी।[39] युद्ध में जाने से पूर्व पत्नी पति के मस्तक पर तिलक करके अपने आराध्य से प्रार्थना किया करती थी कि वे इसके पति और देष की रक्षा करें।[40]

स्त्रियों का पातिव्रत धर्म ही उनके जीवन का सर्वस्व था। युद्ध में गए पति की कुषलता के लिए पत्नी घर की छत पर चढ़कर प्रार्थना करती थी।''[41] स्त्री पतिव्रता होती थी। उनमें इतना सतीत्व होता था कि उसके आगे बड़े–बड़े योद्धा (वीर) भी हार जाते थे।[42] उनके सतीत्व का सम्मान किया जाता था।[43]

प्रकृति के विभिन्न रूपों को दिव्य शक्तियों के रूप में पूजा जाता था। नदी देवियों में गंगा [44], यमुना [45], तथा सरयू [46] नदियों की अर्चना की गई है। यज्ञ हवन नियमित रूप से किए जाते थे। उनमें इच्छा पूर्त्यर्थ विभिन्न देवों का आह्वान किया जाता था। कल्याण के लिए ब्रह्मा, विष्णु, महेष, वायु, त्रिलोकी, चारों वेद, चारों समुद्रों, विद्यवान् एवं तपोधन कुलपतियों तथा तपस्वियों को स्मरण किया गया है।[47] इसके अतिरिक्त पृथ्वी [48], लक्ष्मी [49], शची [50], पार्वती [51], अग्नि [51], इन्द्र [53], तथा पर्वतों [54] का भी उल्लेख मिलता है।

इस प्रकार तत्कालीन समाज अधिक धार्मिक नियमानुकूल संचरणषील था तथापि कहीं–कहीं इसके अपवाद भी मिल जाते हैं।

संदर्भ

1. जयनारायण यात्री, 3. जी० कम कनाल एरिया–नीलोखेड़ी दिसम्बर 2003
2. वही; 2/पृष्ठ 27
3. वही, 3/पृष्ठ 52
4. वही,2/पृष्ठ 26–27
5. वही, वही
6. वही, 2/पृष्ठ 27
7. वही, वही
8. वही, 2/पृष्ठ 33–35
9. वही, वही
10. वही, वही/पृष्ठ 22, 5/पृष्ठ 94–95
11. वही, 3/पृष्ठ 39–46
12. वही, वही
13. वही, 3/पृष्ठ 39–45
14. वही, 3/पृष्ठ 41–45
15. वही, वही
16. वही, 3/पृष्ठ 44–45
17. वही, 3/पृष्ठ 46
18. वही, 3/पृष्ठ 48–49, 52
19. वही, 3/पृष्ठ 50–52
20. वही, 3/पृष्ठ 52
21. वही, 3/पृष्ठ 57–62
22. वही, 4/पृष्ठ 67–69
23. वही, 4/पृष्ठ 83–92
24. वही, 4/पृष्ठ 85–89
25. वही, 5/पृष्ठ 94–98
26. वही, 5/पृष्ठ 98
27. वही, 5/पृष्ठ 98
28. वही, वही
29. वही, वही
30. वही,3/पृष्ठ 38
31. वही,6/पृष्ठ 150
32. वही
33. वही, 7/पृष्ठ169
34. वही, 7/पृष्ठ 167–168
35. वही, 7/पृष्ठ 167–168
36. वही, 8/पृष्ठ 184–185
37. वही, 8/ पृष्ठ 187
38. वही, 8/पृष्ठ 161, 184–187
39. वही, 8/पृष्ठ 187
40. वही, 8/ पृष्ठ 192
41. वही, 8/पृष्ठ 197
42. वही, 8/पृष्ठ 198
43. वही, 8/पृष्ठ 198–199
44. वही, 1/पृष्ठ 7, 6/पृष्ठ 151–152, 156
45. वही, 1/पृष्ठ 6–7, 6/पृष्ठ 150
46. वही, 2/पृष्ठ 20, 24
47. वही
48. वही, 1/पृष्ठ 2, 4/पृष्ठ 80, 5/पृष्ठ 105–106, 129, 8/पृष्ठ 191–194, 2/पृष्ठ 129
49. वही, 2/पृष्ठ 27, 3/पृष्ठ 52, 51, 6/पृष्ठ 120–123, 7/पृष्ठ 162
50. वही, 2/पृष्ठ 26, 23, 3/पृष्ठ 50, 4/पृष्ठ 83
51. वही,1/पृष्ठ 15, 3/पृष्ठ 41, 59–60, 4/पृष्ठ 69
52. वही, 1/पृष्ठ 8, 2/पृष्ठ 33, 3/पृष्ठ 52, 4/पृष्ठ 84, 87
53. वही, 1/पृष्ठ 7, 3/पृष्ठ 47
54. वही,1/पृष्ठ 7–8, 25, 4/पृष्ठ 2, 6/पृष्ठ 152